

जिले की कृषि एवं भौगोलिक स्थिति

जिले की कुल कृषि योग्य भूमि 235800 हेक्टेयर है जिसमें 177572 हे० में धान, 81530 हे० में गेहूँ, 8350 हे० में सब्जीवाली फसलें तथा 2155 हे० में गन्ने की खेती होती है। तेलहनी फसलों में मुख्य रूप से राई, सरसों, अलसी, तिल तथा दलहनी में मसूर, चना, अरहर, मूँग की खेती की जाती है, जबकि सब्जियों में मुख्यतः फूलगोभी, आलू, भिण्डी, बैंगन एवं टमाटर आदि प्रमुख फसलें हैं। तिलकुट के छोटे-छोटे उद्योग होने के कारण यहाँ तिल की सर्वाधिक खपत एवं माँग है, अतः उन्नत प्रभेदों द्वारा उत्पादन में वृद्धि की असीम संभावनाएँ हैं। अधिकांश क्षेत्र शुष्क और वर्षा आधारित है, इसलिए मुर्गीपालन, बकरीपालन एवं दुग्धउत्पादन जैसे व्यवसाय की संभावनाएँ अधिक हैं। हाल के वर्षों में जिले के कृषकों में मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, फूल एवं औषधीय पौधों की खेती के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

जिले की जलवायु समशीतोष्ण है जहाँ जून में भीषण गर्मी तथा दिसम्बर में कपकपा देने वाली सर्दी पड़ती है। यहाँ का औसत वार्षिक वर्षा 944 मि० मी० तथा न्यूनतम एवं अधिकतम तापक्रम क्रमशः 2⁰ एवं 45⁰ सेल्सियस है। साधारणतया जिले की मिट्टी मध्यम से भारी प्रकार की है, जिसमें कार्बनिक पदार्थ, मुख्य एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों खासकर जस्ते एवं बोरॉन की कमी पायी जाती है।

(1) जिला का लघु इकाई में विभाजित आँकड़े

गाँवों की कुल संख्या	— 2925
पंचायतों की कुल संख्या	— 333
प्रखण्डों की कुल संख्या	— 24
अनुमंडलों की कुल संख्या	— 04

(2) भूमि उपयोगिता संबंधी आँकड़े (हे० में)

भौगोलिक क्षेत्रफल	— 493774
कृषि योग्य भूमि	— 235800
खरीफ आच्छादन क्षेत्र	— 216400
रबी आच्छादन क्षेत्र	— 191600
गरमा आच्छादन क्षेत्र	— 6632
सिंचित क्षेत्रफल	— 145000
असिंचित क्षेत्रफल	— 83648
बंजर भूमि	— 27836
वनक्षेत्र	— 77836

(3) नलकूपों की संख्या

निजी	— 32079
राजकीय	— 76
सक्रिय राजकीय नलकूप	— 22

(4) मृदा के प्रकार एवं क्षेत्रफल

क्र० सं०	मृदा के प्रकार	क्षेत्रफल (हे०)	प्रतिशत
1.	बलुई दोमट	210.742	42
2.	दोमट	110.20	22
3.	बलुई	70.26	14
4.	केवाल (चिकनी)	86.27	17
5.	पहाड़तलीय बलथर	17.14	05

(5) फसलवार भूमि उपयोगिता

क्र० सं०	फसल	2017-18 आच्छादन (हे०)	उत्पादकता कि०/हे०
1.	धान	160000.00	33.00
2.	मक्का — खरीफ	2500.00	25.00
	रबी	3000.00	40.00
3.	गेहूँ	75000.00	28.50
4.	सरसों	2000.00	11.50
5.	चना	10000.00	10.25
6.	प्याज	8100.00	200
7.	मसूर	12000.00	11.50
8.	मूँग	23000.00	7.80
9.	हरी सब्जियाँ	4500.00	—
10	आलू	12000.00	250

कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया : एक परिचय

कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया की स्थापना राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, बिहार, पूसा, समस्तीपुर के अन्तर्गत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संचिका सं० 18-03/94-AE-1 दिनांक 24.03.2006 में किया गया। बिहार में नये कृषि विश्वविद्यालय के स्थापना के फलस्वरूप यह केन्द्र बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर के नियंत्रण में आ गया है। यह केन्द्र $84^{\circ} 17' 35''$ से $24^{\circ} 16' 31''$ उत्तरी देशान्तर पर मध्य समुद्री तल से 1111 मीटर की ऊँचाई एवं गया - नवादा राष्ट्रीय उच्च पथ-82 पर अवस्थित है। केन्द्र से निकटतम रेलवे स्टेशन एवं निजी बस पड़ाव, मानपुर है जो कि 2 किलोमीटर की दूरी पर क्रमशः उत्तर-पूर्व एवं पश्चिम में अवस्थित है जबकि 6 किलोमीटर पश्चिम गया रेलवे जंक्शन अवस्थित है। अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा एवं बौद्ध धर्मावलम्बियों की तपो भूमि बोधगया तथा विश्वविख्यात भगवान विष्णु का विष्णुपद मंदिर केन्द्र से क्रमशः 13 किलोमीटर एवं 5 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा शत-प्रतिशत वित्तीय संपोषित यह केन्द्र गया जिले के कृषि विकास के लिए प्रतिबद्ध है। इस केन्द्र द्वारा कृषक, महिला कृषक एवं बेरोजगार युवकों/युवतियों को व्यवसायिक प्रशिक्षण के साथ-साथ जिले के कृषि विभाग, जल एवं मृदा संरक्षण विभाग एवं विभिन्न सरकारी व गैर-सरकारी संस्थानों के प्रसार कार्यकर्ताओं को कृषि संबंधी आधुनिकतम तकनीकी जानकारी से अवगत कराया जाता है जिससे अद्यतन कृषि अनुसंधान से कृषकों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके। नए अनुसंधानों, प्रभेदों एवं तकनीकों का स्थानीय स्तर पर मूल्यांकन एवं परिष्करण के पश्चात् प्रत्यक्षण करना केन्द्र की प्राथमिकता है। किसान के खेतों पर प्रत्यक्षण एवं अनुसंधान कार्य किया जाता है जिसमें कृषि वैज्ञानिक एवं किसान साथ-साथ कार्य कर एक दूसरे के अनुभव से लाभान्वित होते हैं। न्यूनतम लागत से कृषि उत्पादकता में वृद्धि करना केन्द्र का प्रमुख उद्देश्य है। कृषि सलाहकार सेवा के अंतर्गत समसामयिक कृषि समस्याओं का समाधान किया जाता है। वैज्ञानिकों द्वारा प्रक्षेत्र-भ्रमण, प्रक्षेत्र-दिवस, कृषक-गोष्ठी, किसान मेला, वैज्ञानिक सम्मेलन एवं किसान चौपाल द्वारा कृषि संबंधी नवीनतम तकनीकी जानकारी से किसान भाईयों को अवगत कराने के साथ-साथ उत्पादन तकनीक के अनुसरण द्वारा किसान भाईयों का बाजार पर निर्भरता कम कराने हेतु पहल की जा रही है। इस केन्द्र द्वारा तत्कालिक वर्ष में किए गए कार्यों का विवरण इस प्रकार है:-

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की नौवीं बैठक की कार्यवाही प्रतिवेदन

आयोजन:

कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया के वैज्ञानिक सलाहकार समिति का नौवीं बैठक का आयोजन दिनांक 28.08.2017 को किया गया।

स्वागत:

बैठक में उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत किया गया।

उद्घाटन:

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की नौवीं बैठक का शुभारम्भ डा0 अजय कुमार सिंह, माननीय कुलपति, बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर, भागलपुर की अध्यक्षता में दिनांक 28.08.2017 को कृषि विज्ञान केन्द्र, गया के सभागार में 2.30 बजे अपराह्न में दीप प्रज्वलित कर किया गया। तत्पश्चात् मुख्य वैज्ञानिक-सह-विश्वविद्यालय प्राध्यापक, प्रभारी प्रधान डा0 एस0 बी0 सिंह द्वारा पिछले बैठक में दिए गए सुझावों पर की गयी कार्यवाही से अवगत कराया गया तथा दिसम्बर 2016 से अगस्त 2017 तक का प्रगति प्रतिवेदन तथा आगामी कार्य योजना का प्रस्तुतीकरण माननीय सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

उपस्थिति:

बैठक में भाग लेने वाले माननीय सदस्यों का उपस्थिति इस प्रकार है –

- | | |
|---|---------|
| 1. डा0 अजय कुमार सिंह, माननीय कुलपति
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर | अध्यक्ष |
| 2. डा0 अंजनी कुमार सिंह, निदेशक
कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी), पटना | |
| 3. डा0 रवीन्द्र कुमार सुहाने, निदेशक, प्रसार शिक्षा
बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर | |
| 4. मुख्य वैज्ञानिक-सह-विश्वविद्यालय प्राध्यापक
प्रभारी प्रधान, कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया | |
| 5. संयुक्त कृषि निदेशक, मगध प्रमण्डल, गया | |
| 6. परियोजना निदेशक, आत्मा, गया | |
| 7. उप निदेशक, उद्यान, गया | |
| 8. उप परियोजना निदेशक, आत्मा, गया | |
| 9. श्री विनय कुमार सिंह, ए. डी. पी. पी., गया | |
| 10. श्री अनिल कुमार, मुख्य कार्यकर्ता, प्रान (PRAN), गया | |
| 11. जिला कृषि परामर्शी, एन.एफ.एस.एम., गया | |
| 12. श्रीमती मीरा कुमारी सिन्हा, प्रगतिशील किसान, गया | सदस्य |
| 13. श्री वीरेन्द्र सिंह, प्रगतिशील किसान, तेतरिया, गया | सदस्य |

14. श्री चन्द्रभूषण सिंह, प्रगतिशील किसान, महमदपुर, टिकारी, गया
 15. श्री विनोद कुमार सिंह, प्रगतिशील किसान, नवादा (शेरघाटी), गया
 16. श्री रमेश सिंह, प्रगतिशील किसान, गया
 17. श्रीमती रूपा देवी, प्रगतिशील किसान, गया
 18. श्रीमती रेशमा देवी, प्रगतिशील किसान, गया
 19. श्री निशांत कुमार, प्रगतिशील किसान, गया
 20. श्री आदित्य, प्रगतिशील किसान, मुरेरा (कोंच), गया
 21. श्री मनीष निषाद, प्रगतिशील किसान, गया
 22. श्री सूर्य देव मेहता, प्रगतिशील किसान, पुनावां, वीरगंज, गया
 23. श्री शत्रुघन सिंह, प्रगतिशील किसान, गया
 24. श्री विपिन कुमार निराला, प्रगतिशील किसान, डीहा (गुरारू), गया
 25. डा० निधि सिन्हा, विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
 26. डा० अशोक कुमार, विषय वस्तु विशेषज्ञ (प्रसार शिक्षा), कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
 27. डा० गोविन्द कुमार, विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
 28. डा० अनिल कुमार रवि, विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशु विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
 29. श्री मुकेश कुमार, प्रक्षेत्र प्रबंधक, कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
 30. श्रीमती नेहा, कार्यक्रम सहायक (प्रयोगशाला), कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
 31. श्री प्रेम कुमार ठाकुर, सहायक, कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
 32. डा० वेद प्रकाश, कार्यक्रम सहायक (कम्प्यूटर), कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
 33. श्री पटवर्द्धन कुमार, आशुलिपिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
 34. श्री रोहित कुमार, चालक, कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
 35. श्री अखिलेश कुमार सिंह, चालक कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
- अन्य प्रगतिशील किसान बंधु आदि ।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति (नौवीं बैठक) के सदस्यों द्वारा दिए गए मुख्य सुझाव का क्रियान्वयन इस प्रकार वर्णित है:-

क्र० सं०	सुझाव	क्रियान्वयन
1.	<p>माननीय कुलपति, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर –</p> <p>i. आगामी माह में किसान ज्ञान रथ के जिले में आगमन से संबंधित कार्य योजना के निर्माण में संयुक्त कृषि निदेशक, कृषि विभाग एवं आत्मा, गया का सहयोग लिया जाए। जिले के विभिन्न प्रखण्ड के किसान सलाहकार एवं कृषि समन्वयकों की सहभागिता सुनिश्चित की जाए।</p> <p>ii. केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न प्रत्यक्षण एवं परीक्षण कार्यक्रमों में कृषकों के खेत से एकत्रित मिट्टी के नमूनों के परीक्षण हेतु आवश्यक लागत का भुगतान तत् संबंधित आवंटित राशि से किया जाए।</p>	<p>i. कृषि विभागीय सहयोग एवं केन्द्र के विशेषज्ञों व कर्मियों के सहभागिता से किसान ज्ञान रथ जिले के विभिन्न गाँवों में भ्रमण कर तकनीकी जानकारी देकर, कृषकों के तकनीकी समस्याओं का समाधान किया गया।</p> <p>ii. मिट्टी नमूनों के जाँच प्रत्यक्षण एवं परीक्षण कार्यक्रमों में कृषकों के खेत से एकत्रित मिट्टी नमूनों की जाँच की गई।</p>
2.	<p>श्री विपिन कुमार, प्रगतिशील कृषक, गुरारू –</p> <p>लीज (पट्टा) पर लिए गए 100 एकड़ जमीन पर समेकित कृषि प्रणाली खेती करने के लिए आवश्यक तकनीकी प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध कराई जाए।</p>	<p>श्री विपिन कुमार द्वारा समेकित कृषि प्रणाली का कोई विशेष कार्य नहीं किया जा रहा है, पता करने पर ज्ञात हुआ कि कृषि के अलावे रोजगार के अन्य कार्य कर रहे हैं।</p>
3.	<p>श्री आदित्य, प्रगतिशील कृषक, कोंच –</p> <p>किसान के खेतों के समतलीकरण हेतु लेजर लेवलर के प्रयोग एवं उपलब्धता सुनिश्चित कराई जाए।</p>	<p>श्री आदित्य द्वारा खेतों के समतलीकरण हेतु लेजर लेवलर के प्रयोग एवं उपलब्धता के संबंध में कोई रुचि नहीं लिया गया है, पता करने पर ज्ञात हुआ कि कृषि के अलावे रोजगार के अन्य कार्य कर रहे हैं।</p>
4.	<p>निदेशक, अटारी, पटना –</p> <p>i. प्रत्यक्षण एवं परीक्षण के प्रस्तावित कार्यक्रमों की प्रति कृषि अनुसंधान अनुप्रयोग संस्थान, पटना को भेजी जाए।</p>	<p>i. निदेशक, अटारी, पटना द्वारा दिए गए सुझाव के आलोक में कार्यक्रमों की प्रतिवेदन को अनुप्रयोग संस्थान, पटना को भेजी गई है।</p>

	ii. प्रगति प्रतिवेदन के प्रस्तुतीकरण डाटा के माध्यम से किया जाए।	ii. प्रगति प्रतिवेदन के प्रस्तुतीकरण डाटा के माध्यम से की जा रही है।
5.	<p>निदेशक, प्रसार शिक्षा, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर –</p> <p>i. कृषक के खेतों से मिट्टी के नमूनों को नियमित रूप से एकत्रित किए जाए एवं ससमय उनको जाँच हेतु कृषि अनुसंधान संस्थान, पटना या अन्य केन्द्रों पर अथवा बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर से संपर्क किया जाए।</p> <p>ii. विडियो कांफ्रेंसिंग के कार्यक्रमों में अधिक किसानों की सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु कृषि विभाग एवं आत्मा के सहयोग से किसानों की उपस्थिति सुनिश्चित कराया जाए।</p> <p>iii. किसान चौपाल का आयोजन कृषि विभाग, आत्मा एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा संयुक्त रूप से किया जाए एवं अन्य कार्यक्रम में कृषि विभाग, उद्यान एवं आत्मा से सहयोग एवं समन्वय स्थापित कर कार्य संपादित की जाए।</p> <p>iv. फूल के प्रयोग के पश्चात् प्राप्त होने वाले व्यर्थ (फूलों) पदार्थों का प्रयोग वर्मीकम्पोस्ट बनाने हेतु प्रयुक्त करने के लिए कृषकों को प्रोत्साहित किया जाए।</p> <p>v. उद्यान विषय पर अयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में उप निदेशक, उद्यान को प्रशिक्षक के रूप में उपयोग किया जाए साथ ही फूलों की खेती को बढ़ावा देने हेतु कृषकों को जागरूक किया जाए।</p> <p>vi. केन्द्र द्वारा उत्पादित बीजों की उपलब्धता सूची सूचना पट्ट पर लगाई जाए।</p> <p>vii. अंगीकृत ग्राम में कृषि से जुड़े कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव हेतु</p>	<p>i. निदेशक, प्रसार शिक्षा, बिहार कृषि विश्व – विद्यालय, सबौर, भागलपुर के सुझाव के अनुपालन में कृषकों के खेतों से मिट्टी नमूनों को नियमित रूप से विषय वस्तु विशेषज्ञों द्वारा एकत्रित कर जाँच किया गया।</p> <p>i. विडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से विश्वविद्यालय द्वारा प्राप्त विषयानुसार सहभागिता सुनिश्चित की जा रही है।</p> <p>iii. कृषि विज्ञान केन्द्र, गया द्वारा निश्चित दिवस के अनुसार एवं कृषि विभाग द्वारा संचालित किसान चौपाल में कृषि विज्ञान केन्द्र, गया के विशेषज्ञों एवं प्रभारी द्वारा भाग लिया जाता है।</p> <p>iv. बोधगया के पंचायत पड़रिया के महिला समूहों “एक किरण आरोह” ;। तंल वी भ्वचमद्ध में गेंदे फूल की खेती से एवं व्यर्थ फूलों से वर्मीकम्पोस्ट बनाने में प्रयोग करने संबंधी जानकारी दी गई।</p> <p>v. उपनिदेशक, उद्यान से सहयोग लेकर महिला समूहों में फूलों की खेती को बढ़ावा देने हेतु जागरूक किया गया।</p> <p>vi. केन्द्र द्वारा उत्पादित बीजों की उपलब्धता की सूचना समयानुसार सूचना-पट्ट पर लगाई जाती है।</p> <p>vii. अंगीकृत ग्राम में कृषि से जुड़े एवं अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव हेतु जिले के संबंधित विभागों एवं</p>

<p>जिले के संबंधित विभागों एवं संस्थाओं का सहयोग सुनिश्चित किया जाए।</p> <p>viii. प्रत्येक दो वर्ष के अंतराल पर नए गाँवों का चुनाव कर अंगीकृत करना सुनिश्चित करें।</p> <p>ix. कौशल विकास कार्यक्रम के तहत विश्व-विद्यालय द्वारा संचालित विभिन्न विषयों की जानकारी हेतु सूची सूचना-पट्ट पर लगाएं जिससे विषय के जरूरतमंद कृषक विषयवार प्रशिक्षणों में शामिल होकर लाभ प्राप्त कर सकें।</p>	<p>संस्थानों से सहयोग व संपर्क कर एवं टास्क फोर्स जैसे महत्वपूर्ण बैठक में कार्य संबंधित चर्चा की जाती है।</p> <p>viii. अंगीकृत गाँव को वर्ष 2018-19 में दो वर्ष पूरे हो जाएँगे तत्पश्चात् नए गाँवों को अंगीकृत किया जाएगा।</p> <p>ix. कौशल विकास कार्यक्रम के तहत विश्व-विद्यालय द्वारा केन्द्र पर संचालित विभिन्न विषयों की जानकारी हेतु सूची सूचना-पट्ट पर लगाई गई है।</p>
---	---

केन्द्र पर कार्यरत वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों की स्थिति (अगस्त 2018)

क्र. सं.	कार्यरत वैज्ञानिक / कर्मचारी	पदनाम	विभाग	वेतनमान (रु०)	योगदान की तिथि	स्थायी / अस्थायी	अभ्युक्ति
1.	डा० एस० बी० सिंह	मुख्य वैज्ञानिक-सह-विश्वविद्यालय प्राध्यापक, प्रभारी प्रधान	गव्य विज्ञान	37400-67000 (10,000 / -)	17.03.1991	स्थायी	
2.	डा० अशोक कुमार	विषय वस्तु विशेषज्ञ	प्रसार शिक्षा	15600-39100	01.08.2008	स्थायी	
3.	डा० गोविन्द कुमार	विषय वस्तु विशेषज्ञ	सस्य विज्ञान	15600-39100	11.06.2009	स्थायी	का० आ० सं. नि.प्र. / 7(III) / 176, दिनांक 29.08.18 के आलोक में स्थानान्तरित
4.	डा० अनिल कुमार रवि	विषय वस्तु विशेषज्ञ	पशुपालन विज्ञान	15600-39100	20.04.2012	स्थायी	
5.	श्री मुकेश कुमार	प्रक्षेत्र प्रबंधक	-	9300-34800	30.10.2012	स्थायी	
6.	श्रीमती नेहा	कार्यक्रम सहायक (लैब. टेक.)	-	9300-34800	02.11.2012	स्थायी	
7.	श्री प्रेम कुमार टाकुर	सहायक	-	9300-34800	13.04.2013	स्थायी	
8.	श्री वेद प्रकाश	कार्यक्रम सहायक (कम्प्यूटर)	-	9300-34800	20.05.2013	स्थायी	
9.	श्री पटवर्द्धन कुमार	स्टेनोग्राफर	-	5200-20200	04.07.2013	स्थायी	
10.	श्री रोहित कुमार	चालक	-	5200-20200	22.05.2015	स्थायी	
11.	श्रीमती लक्ष्मी देवी	स्पोर्टिंग स्टाफ	-	6973.5 / -	01.04.2016	अस्थायी	मिथिला
12.	श्री नौलेश कुमार	स्पोर्टिंग स्टाफ	-	रु० प्रति माह	01.04.2016	अस्थायी	कंस्ट्रक्शन द्वारा

प्रशिक्षण कार्यक्रम की उपलब्धियाँ

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम

(अ) कृषकों के लिए

क्र० सं०	विषय	लक्ष्य	उपलब्धि	लाभार्थियों की संख्या						कुल योग
				सामान्य			अनु० जाति			
				पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	
1.	फसल उत्पादन	12	69	3743	1162	4905	1447	1348	2795	7700
2.	गृह विज्ञान	06	14	31	241	272	5	47	52	324
3.	प्रसार शिक्षा	12	33	1086	622	1708	448	455	903	2611
4.	पशुचिकित्सा एवं पशुपालन	06	30	1002	225	1227	524	327	851	2078
	योग	36	146	5862	2250	8112	2424	2177	4601	12713

प्रशिक्षण के विषय (कृषकों के लिए)

विभाग	प्रशिक्षण के विषय
फसल उत्पादन	<ol style="list-style-type: none"> 1. कम्पोस्ट एवं तरल जैव उर्वरकों का महत्व एवं उपयोगिता 2. टिकाउ खेती हेतु जैव उर्वरकों की महत्ता (2) 3. रबी फसलों में बीज उपचार एक बहुउद्देशीय तकनीक 4. मिट्टी जनित पादप रोग नियंत्रण हेतु शस्य क्रियाएं 5. धान में खर-पतवार प्रबंधन के उपाय 6. राई-सरसों उत्पादन की उन्नत तकनीक 7. चना उत्पादन की उन्नत तकनीक 8. रबी फसलों की उत्पादन तकनीक 9. रबी दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों की महत्ता 10. मसूर फसल की उत्पादन तकनीक 11. तेलहनी फसलों की उत्पादन तकनीक 12. दलहनी फसलों की उत्पादन वृद्धि हेतु जैव उर्वरकों का प्रयोग 13. दलहनी एवं तेलहनी फसलों में उर्वरक प्रबंधन 14. धान-दलहनी फसल चक्र प्रबंधन 15. मसूर उत्पादन की उन्नत तकनीक 16. विलंब से बाई गई गेहूँ की उत्पादन तकनीक 17. गेहूँ में उर्वरक एवं सिंचाई प्रबंधन 18. गेहूँ में एकीकृत खर-पतवार प्रबंधन 19. सब्जियों के गुणवत्तायुक्त एवं निरंतर उत्पादन हेतु जैविक खेती 20. गेहूँ, दलहनी एवं तेलहन फसलों के बीज उत्पादन तकनीक 21. गरमा मूँग की बीज उत्पादन तकनीक 22. प्रक्षेत्र एवं गाय से प्राप्त अवशिष्ट पदार्थों से प्राकृतिक खेती 23. मूँग उत्पादन की उन्नत तकनीक 24. मूँग में खर-पतवार प्रबंधन

25. गरमा मूँग एवं तिल की खेती
26. कीट-व्याधि नियंत्रण हेतु शस्य क्रियाओं का महत्व
27. महत्वपूर्ण फसलों के उत्पादन तकनीक
28. फसल उत्पादन को बढ़ाने एवं मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने में हरी खाद का महत्व
29. गरमा सब्जी में सिंचाई प्रबंधन
30. जैविक फसल उत्पादन तकनीक
31. जीरो टिलेज मशीन से धान की सीधी बुआई की तकनीक
32. धान उत्पादन तकनीक
33. धान की सीधी बुआई में खर-पतवार प्रबंधन
34. सीधी बुआई विधि से लगाए गए धान में उर्वरक एवं सिंचाई प्रबंधन
35. हरी खाद की महत्ता
36. खाद्यान फसलों में एकीकृत उर्वरक प्रबंधन
37. धान फसल की उत्पादन तकनीक
38. कम पानी की स्थिति में धान उत्पादन तकनीक
39. नए आम के बगीचा में एकीकृत उर्वरक प्रबंधन
40. खरीफ मूँग एवं मूँगफली उत्पादन तकनीक
41. बागवानी प्रबंधन(2)
42. टपक सिंचाई पद्धति के फायदे
43. विस्थापन योग्य (पोर्टेबुल) सिंचाई पद्धति से लाभ
44. धान का नर्सरी प्रबंधन
45. मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन
46. नए बागों की स्थापना
47. नए बागों में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन
48. हरी खाद का महत्व एवं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन
49. बागवानी फसलों में सिंचाई प्रबंधन
50. बागों में गहरी जुताई का महत्व
51. सब्जी के नर्सरी में उर्वरक प्रबंधन
52. आय वृद्धि हेतु उद्यानिक फसलों का महत्व
53. अरहर फसल उत्पादन की उन्नत तकनीक
54. आय वृद्धि हेतु संरक्षित खेती का महत्व
55. संरक्षित खेती में सूक्ष्म सिंचाई पद्धति का उपयोग
56. धान की सीधी बुआई का उत्पादन तकनीक
57. धान का "मैट नर्सरी" उगाने की तकनीक
58. खाद्यान फसल उत्पादन में "रेन गन" सिंचाई पद्धति का महत्व
59. बावानी में खर-पतवार प्रबंधन
60. खरीफ सब्जियों में खर-पतवार प्रबंधन
61. प्रो ट्रे/प्लास्टिक ट्रे में सब्जी नर्सरी उत्पादन तकनीक
62. किसानों की आय दोगुनी करने हेतु समेकित कृषि प्रणाली
63. नये स्थापित बागों में अन्तर्वर्ती खेती से लाभ
64. भूगर्भ जल बचाने एवं बढ़ाने के विभिन्न उपाय
65. खरीफ मक्का उत्पादन तकनीक
66. निम्न लागत वाली पॉलीहाउस का महत्व

	67. वेमौसमी उत्पादन तकनीक के फायदे 68. मूँगफली फसल की उत्पादन तकनीक 69. अरहर उत्पादन की उन्नत फसल प्रणाली
गृह विज्ञान	1. कपड़ों की कटाई एवं सिलाई 2. सुरक्षित अनाज भंडारण की घरेलू विधियां 3. महिला स्वरोजगार के विभिन्न विकल्प 4. गृह वाटिका एवं मानव स्वास्थ्य 5. भोजन पकाने के दौरान होने वाले पोषक तत्वों के क्षय को कम करना 6. पोषक तत्वों का महत्व एवं कमी के लक्षण 7. मशरूम उत्पादन तकनीक 8. ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध सस्ते पौष्टिक आहार 9. मौसमी फल तथा सब्जियों का प्रसंस्करण 10. टमाटर का मूल्य संवर्धन 11. किचेन गार्डन एवं मानव स्वास्थ्य 12. खाद्य मिलावट 13. SHGs द्वारा महिला सशक्तिकरण 14. आलू का मूल्य संवर्धन
प्रसार शिक्षा	1. बीज उत्पादन हेतु कृषकों में क्षमता विकास 2. आय सृजन हेतु स्वयं सहायता समूह की आवश्यकता एवं महत्व 3. स्वयं सहायता समूह किसानों/महिलाओं के स्वरोजगार का एक माध्यम 4. स्वयं सहायता समूह द्वारा मुख्य धारा से जोड़ना 5. बाजार की उपलब्धता हेतु कृषकों में जागरूकता 6. स्वयं सहायता समूह द्वारा कृषकों के लिए स्वरोजगार 7. किसानों को दैनिक अद्यतन से जागरूकता 8. किसानों में वर्मीकम्पोस्टिंग हेतु उद्यमिता विकास 9. जैविक खेती 10. क्षमता संवर्धन एवं स्वयं सहायता समूह 11. जैविक खेती समय की मांग 12. उत्पादन हेतु बाजार की उपलब्धता 13. मधुमक्खीपालन (+8) 14. मधुमक्खीपालन स्वरोजगार का जरिया 15. मधुमक्खीपालन द्वारा आय बढ़ाना 16. मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन 17. नया बाग लगाना एवं उसका प्रबंधन 18. सूक्ष्म सिंचाई एवं नया बाग लगाना 19. मधुमक्खीपालन एवं मशरूम उत्पादन से आय सृजन 20. सब्जी नर्सरी प्रबंधन 21. नया बाग लगाना एवं उसका प्रबंधन 22. मधुमक्खीपालन कर सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार लाना 23. मधुमक्खीपालन एवं मशरूम उत्पादन रोजगार का जरिया 24. मधुमक्खीपालन एवं मशरूम उत्पादन तथा इनका मूल्य संवर्धन 25. मधुमक्खी एवं मशरूम उत्पादों का मूल्य संवर्धन

पशुचिकित्सा एवं पशुपालन	<ol style="list-style-type: none"> 1. स्वच्छ दूध उत्पादन 2. लघुस्तरीय बकरी पालन 3. दुधारू पशुओं में HS & BQ का बचाव एवं प्रबंधन 4. वैज्ञानिक तरीके से दुग्ध उत्पादन 5. वर्ष भर चारा उत्पादन 6. मुर्गियों में टीकाकरण 7. पुआल का युरिया द्वारा उपचार 8. विभिन्न मौसम में पशुओं का देखभाल 9. दुधारू पशुओं का विभिन्न अवस्था में भोजन प्रबंधन 10. दुधारू पशुओं में सामान्य रोगों का प्रबंधन 11. दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी के विभिन्न तकनीक 12. बकरियों के सामान्य रोग 13. पशुओं में बांझपन प्रबंधन 14. संतुलित आहार बनाने की विधि 15. व्यावसायिक ब्रोयलर उत्पादन 16. पशुओं में टीकाकरण 17. बैकायार्ड मुर्गी पालन 18. गर्मी में पशुओं का देखभाल
-------------------------	---

(ब) बेरोजगार युवक/युवतियों के लिए

क्र० सं०	विषय	लक्ष्य	उपलब्धि	लाभार्थियों की संख्या						कुल योग
				सामान्य			अनु० जाति			
				पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	
1.	फसल उत्पादन	01	01	21	01	22	01	00	01	23
2.	गृह विज्ञान	02	04	24	47	71	5	12	17	88
3.	प्रसार शिक्षा	02	02	46	01	47	04	01	05	52
4.	पशुचिकित्सा एवं पशुपालन	01	02	43	02	45	02	01	03	48
योग		06	09	134	51	185	12	14	26	211

प्रशिक्षण के विषय (रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण)

विभाग	प्रशिक्षण के विषय
फसल उत्पादन	1. धान के बीज उत्पादन की तकनीक
गृह विज्ञान	1. मशरूम उत्पादन तकनीक
	2. सर्फ उत्पादन व्यावसायिक प्रशिक्षण
	3. सिलाई –कढ़ाई
	3. मोमबत्ती निर्माण व्यावसायिक प्रशिक्षण
प्रसार शिक्षा	1. केंचुआ खाद उत्पादन द्वारा उद्यमिता विकास 2. स्वरोजगार हेतु मधुमक्खीपालन
पशुचिकित्सा एवं पशुपालन	1. दुग्ध उत्पादन
	2. बकरीपालन

(स) प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए

क्र० सं०	विषय	लक्ष्य	उपलब्धि	लाभार्थियों की संख्या						कुल योग
				सामान्य			अनु० जाति			
				पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग	
1.	फसल उत्पादन	02	03	78	02	80	11	00	11	91
2.	गृह विज्ञान	01		0	40	40	0	05	05	45
3.	प्रसार शिक्षा	01	01	90	58	148	09	12	21	169
	कुल	4	1	168	100	268	20	17	37	305

विभाग	प्रशिक्षण के विषय
फसल उत्पादन	1. पादप हार्मोन्स एवं उनकी भूमिका 2. पोषक तत्वों की कमी के लक्षण एवं रोग के लक्षणों में विभेद एवं पहचान 3. तेलहनी फसलों की उत्पादन तकनीक
गृह विज्ञान	मानव स्वास्थ्य एवं पोषण
प्रसार शिक्षा	उद्यमिता विकास हेतु प्रसार कार्यकर्ताओं में क्षमता का विकास

(द) प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र. सं.	विषय	माह	कोटि	अवधि (दिवस)	लाभा-र्थियों का सं०	प्रायोजक
1.	दुग्ध उद्यमिता हेतु कार्यशाला	सितम्बर 2017	P. F.	1	30	ATMA, Gaya
2.	शष्पता की माप	सितम्बर 2017	P. F.	1	25	Plant Protection, Gaya
3.	IRRAS प्रोजेक्ट पर कार्यशाला	सितम्बर 2017	P. F.	1	58	PRAN, Gaya
4.	रबी फसल की वैज्ञानिक खेती	अक्टूबर 2017	E. F.	1	110	ATMA, Gaya
5.	रबी फसल की उत्पादन तकनीक	अक्टूबर 2017	E. F.	1	102	DAO/ATMA, Gaya
6.	दुधारू पशुओं का प्रबंधन	अक्टूबर 2017	P. F.	1	80	DAO/ATMA, Gaya
7.	रबी फसल की वैज्ञानिक खेती	अक्टूबर 2017	E. F.		82	ATMA, Gaya
8.	मसूर उत्पादन तकनीक	अक्टूबर 2017	P. F.		129	BAO, Bathani
9.	वर्षभर चारा उत्पादन	अक्टूबर 2017	P. F.		92	DAO/ATMA, Gaya
10.	रबी फसल की वैज्ञानिक खेती	अक्टूबर 2017	E. F.	1	131	ATMA, Gaya
11.	तेलहन उत्पादन तकनीक	अक्टूबर 2017	P. F.	1	196	BAO, Konch
12.	खेती के विभिन्न आयाम	अक्टूबर 2017	P. F.	1	95	DAO/ATMA, Gaya
13.	दुधारू पशुओं में टीकाकरण	अक्टूबर 2017	P. F.	1	85	DAO/ATMA, Gaya
14.	दलहन उत्पादन तकनीक	अक्टूबर 2017	P. F.	1	86	BAO, Barachatti
15.	खेती के विभिन्न आयाम	अक्टूबर 2017	P. F.	1	65	DAO/ATMA, Gaya
16.	रबी –तेलहन एवं दलहन में उर्वरक प्रबंधन	अक्टूबर 2017	P. F.	1	116	IFFCO, Gaya
17.	कृषि एवं कृषकों के कल्याण हेतु विशेष जागरूकता कार्यक्रम	दिसम्बर 2017	P. F.	1	250	Directorate of field publicity, Gaya
18.	कृषि व्यवसाय का कार्यशाला	जनवरी 2018	P.F.	1	30	DDM,NABARD, Gaya
19.	फाइटोहार्मोस एवं उसके भागीदारी	जनवरी 2018	P. F.	1	25	ATMA, Gaya
20.	जैविक उर्वरक का उपयोग	फरवरी 2018	P. F.	1	26	NFL, Gaya
21.	Field visit & on spot suggestion	मार्च 2018	P. F.	2	50	DAO/ATMA
22.	Management of cattle in summer, Management of heat stress in dairy animals	मार्च 2018	P. F.	2	72	DAO/ATMA
23.	Management of calf during summer , Clean milk production	मार्च 2018	P. F.	2	88	DAO/ATMA
24.	Field visit & on spot suggestion	मार्च 2018	P. F.	2	52	DAO/ATMA
25.	Package of practices for Rabi Crops field visit and verification of crops	मार्च 2018	E.F.	2	80	DAO/ATMA
26.	Field visit & on spot suggestion	मार्च 2018	P. F.	2	61	DAO/ATMA
27.	Field visit –cum-Training on Rabi Crops	मार्च 2018	P. F.	2	45	DAO/ATMA
28.	Field visit –cum-Training on Rabi Crops	मार्च 2018	P. F.	2	36	DAO/ATMA
29.	Management of cattle in summer, Fodder	मार्च 2018	P. F.	2	68	DAO/ATMA

	production around the year					
30.	Seed production techniques of wheat, Pulses & Oilseeds / Importance of Seed Certification	मार्च 2018	P. F.	1	52	BSSOCA, Patna
31.	Infertility in dairy animals Management of common disease in dairy animals	मार्च 2018	P. F.	2	73	DAO/ATMA
32.	Seed production techniques of Garma Mungbean	मार्च 2018	P. F.	1	40	BSSOCA, Patna
32	Capacity building programme for Elected Women Representative of Panchayati Raj Institutions	मार्च 2018	P. F.	3	45	NIPCCD, N. Delhi
33.	Agronomical measures for control of insect and disease	अप्रैल 2018	P. F.	1	25	ATMA, Gaya
34.	Package of practices for important crops	अप्रैल 2018	P. F.	1	450	ATMA, Gaya
35.	Difference between symptoms caused by Nutrient deficiency and disease in plants	अप्रैल 2018	P. F.	1	25	ATMA, Gaya
36.	Package of production for Oilseed crops	मई 2018	P. F.	1	40	ATMA, Gaya
37.	Techniques for organic crop production	मई 2018	P. F.	1	273	DAO, Gaya
38.	Zero tillage technique in Rice	मई 2018	P. F.	1	70	ATMA, Gaya
39.	DSR & Organic Farming	मई 2018	P. F.	1	70	ATMA, Gaya
40.	DSR & Organic Farming , Paddy cultivation with zero tillage machine	मई 2018	P. F.	1	105	ATMA, Gaya
41.	Package of production for Paddy cultivation	मई 2018	P. F.	1	73	ATMA, Gaya
42.	DSR & Organic Farming , Paddy cultivation with zero tillage machine	मई 2018	P. F.	1	86	ATMA, Gaya
43.	Weed management in DSR	मई 2018	P. F.	1	47	ATMA, Gaya
44.	Management of cattle in summer	मई 2018	P. F.	1	175	ATMA, Gaya
45.	DSR & Organic Farming , Paddy cultivation with zero tillage machine	मई 2018	P. F.	1	102	ATMA, Gaya
46.	Fertilizer & water management in DSR	मई 2018	P. F.	1	85	ATMA, Gaya
47.	Management of disease in Dairy animal	मई 2018	P. F.	1	155	ATMA, Gaya
48.	DSR & Organic Farming , Paddy cultivation with zero tillage machine	मई 2018	P. F.	1	80	ATMA, Gaya
49.	Importance of Green manure crops	मई 2018	P. F.	1	67	ATMA, Gaya
50.	Vaccination in dairy animals	मई 2018	P. F.	1	165	ATMA, Gaya
51.	DSR & Organic Farming , Paddy cultivation with zero tillage machine	मई 2018	P. F.	1	115	ATMA, Gaya
52.	Package of practices for pigeonpea cultivation (DAESI Training)	मई 2018	P. F.	1	69	ATMA, Gaya
53.	Management of HS&BQ	मई 2018	P. F.	1	178	ATMA, Gaya

2. अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण (फसल उत्पादन)

क्र० सं०	फसल	प्रभेद	किसानों की संख्या	क्षेत्रफल (हे०)	उत्पादन (क्विंटल/हे०)			लोकल चेक कु०/हे०	उत्पादन में बढ़ोतरी प्रतिशत में
					न्यूनतम	अधिकतम	औसत		
फसल उत्पादन									
1.	धान	रा० श्वेता	25	10	41.60	55.40	46.80	40.30	16.12
2.	अरहर	नरेन्द्र अरहर-1	22	10	12.30	19.40	16.70	11.60	44.0
3.	राई	RGN 48	36	20.0	8.55	15.80	12.90	9.20	40.20
4.	चना	PG 186	42	20.0	12.10	18.40	15.90	11.30	40.70
5.	मसूर	HUL 57	57	30.0	9.0	15.40	12.10	8.30	45.70
6.	गेहूँ	HI1563	25	10.0	27.10	36.80	31.80	26.50	20.0
7.	गेहूँ	HD-2733	10	1.0	37.90	46.10	43.40	26.50	63.0
		HD-2967	10	1.0	37.10	43.90	40.70	26.50	53.50
		HD-2985	05	0.50	28.20	34.70	31.30	26.50	18.10
		HD-3118	05	0.50	28.60	35.30	32.20	26.50	21.50
8.	मूँग	PDM 139	21	10.0	6.90	11.10	9.15	6.40	42.90
प्रसार शिक्षा									
11.	मशरूम (2015-16)	आयस्टर	50	2kg/ farmer	14.50	16.50	15.60	12.00	30
12.	किचेन गार्डन	सब्जी बीज	50	200g/ farmer	90	130	110 (250kg)	50 (120kg)	83
पशुपालन									
13.	फूल गोभी	शीतल	20	2.0	280.70	317.15	300.77	243.68	19
14.	बकरी	ब्लैक बंगाल	10	1/कृषक	परिणाम प्रगति में				

3. प्रक्षेत्र पर परीक्षण

(1) शीर्षक: धान की फसल में विभिन्न 'App' आधारित उर्वरकों की अनुशंसा के आधार पर उपज का आकलन।

समस्या: कृषकों द्वारा उर्वरकों का असमय एवं असंतुलित व्यवहार

तकनीक का विस्तृत विवरण: (धान की किस्में)

तकनीक-1: धान फसल मैनेजर तकनीक आधारित उर्वरकों की अनुशंसा (84:28:25Kg NPK+28.5KgZnSO₄/ha)

तकनीक-2: पोषक तत्व विशेषज्ञ तकनीक आधारित उर्वरकों की अनुशंसा(100:26:41Kg NPK+23.5KgZnSO₄/ha)

तकनीक-3: राज्य अनुशंसा (100:50:30Kg NPK+15KgZnSO₄/ha)

तकनीक-4: कृषक पद्धति (136:31:20Kg NPK+0.0KgZnSO₄/ha)

तकनीकों का मूल्यांकन, सूचकांक कारकों के साथ:

तकनीकी विकल्प	पुनरा वृत्ति	कल्लों की सं० (प्रति वर्ग मी०)	बाली में दानों की सं०	1000 दानों का वनज (ग्राम)	उपज (क्वि० / हे०)	उत्पादन लागत (रु०/ हे०)	कुल लाभ (रु०/ हे०)	शुद्ध लाभ (रु०/ हे०)	लाभ एवं लागत का अनुपात
तकनीक-1	10	284	305	14.43	49.50	28870	76750	47880	2.65
तकनीक -2		315	318	14.85	56.40	31717	87100	55383	2.75
तकनीक -3		291	315	14.49	51.20	30970	79300	48330	2.65
तकनीक -4		281	303	14.32	46.60	29130	72400	43270	2.48

परिणाम: मध्यम अवधि के धान फसल में विभिन्न "एप्प" आधारित उर्वरकों की अनुशंसा के आधार पर प्राप्त परिणाम का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह पाया गया कि तकनीक-2 अर्थात् पोषक तत्व विशेषज्ञ तकनीक द्वारा अनुशंसित उर्वरकों की मात्रा को अपनाने से उपज (56.40क्व०/हे०), शुद्ध लाभ (55383रु०/हे०) एवं (2.75) प्राप्त हुआ जो अन्य अपनाये गये तकनीकों में अधिकतम था। हांलाकि धान फसल मैनेजर तकनीक आधारित उर्वरकों की अनुशंसा एवं राज्य अनुशंसा द्वारा प्राप्त परिणाम एक-दूसरे के समतुल्य पाया गया एवं दूसरे स्थान पर था।

अतः कृषक तकनीक-2 को अपनाकर अधिकतम उपज के साथ लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

अनुसंधान के लिए चिन्हित व्यवधान:

गया जिले में प्रत्येक किसानों के लिए धान फसल मैनेजर तकनीक द्वारा उर्वरकों की अनुशंसा लगभग एक समान ही था जबकि सब के खेत की स्थिति एवं व्यवस्था अलग-अलग थी।

किसान की सहभागिता एवं उनकी प्रतिक्रिया:

हांलाकि यह तकनीक कृषकों के लिए नयी है परन्तु कुछ जागरूक किसान इसे समझ पाने एवं अपनाने की दिशा में आगे आ रहे हैं। इस तकनीक को अपनाने से उर्वरकों का अनुचित एवं असंतुलित व्यवहार रुक सकेगा, उत्पादन लागत कम आएगी एवं उत्पादकता में बढ़ोतरी होगी।

(2) शीर्षक: उर्वरक के भिन्न-भिन्न मात्राओं के प्रयोग से कम अवधि वाली धान के उपज का तुलनात्मक अध्ययन।

समस्या: कम अवधि के धान में उर्वरकों का असंतुलित प्रयोग

तकनीक का विस्तृत विवरण:

तकनीक-1: वर्तमान में उर्वरकों की अनुशंसा (Kg/ha) 80:40:20 (नेत्रजन: स्फुर: पोटेश)

तकनीक-2: प्रस्तावित उर्वरकों की अनुशंसा (Kg/ha) 100:45:30 (नेत्रजन: स्फुर: पोटेश)

तकनीक-3: कृषक पद्धति (Kg/ha) 110:30:0 (नेत्रजन:स्फुर:पोटेश)

तकनीकों का मूल्यांकन, सूचकांक कारकों के साथ:

तकनीकी विकल्प	पुनरावृत्ति	कल्लों की सं० (प्रति वर्ग मी०)	बाली में दानों की सं०	1000 दानों का वनज (ग्राम)	उपज (क्वि० / हे०)	उत्पादन लागत (रु०/हे०)	कुल लाभ (रु०/ हे०)	शुद्ध लाभ (रु०/ हे०)	लाभ एवं लागत का अनुपात
तकनीक-1	10	218	225.30	22.94	45.80	29920	60250	30330	2.01
तकनीक -2		226	232.20	23.10	49.70	30343	65125	34782	2.14
तकनीक -3		198	202.60	22.85	41.40	28520	54750	26230	1.92

परिणाम : कम अवधि के धान के किस्म सहभागी में उर्वरकों के विभिन्न मात्राओं के प्रयोग के आधार पर उपज एवं अन्य कारकों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह पाया गया कि प्रस्तावित उर्वरकों की अनुशंसा (तकनीक-2) को अपनाने के उपरान्त धान फसल की उपज 49.70 कु०/हे०, शुद्ध लाभ 34782रु०/हे० एवं लाभ लागत अनुपात 2.14 प्राप्त हुआ जो अन्य तकनीक की अपेक्षा अधिकतम है।

अतः कम अवधि के धान उत्पादन से अधिकतम लाभ प्राप्त करने हेतु उर्वरकों का प्रस्तावित मात्रा (100:45:30 कि०/हे० नेत्रजन:स्फुर:पोटेश) लाभप्रद है।

अनुसंधान के लिए चिन्हित व्यवधान:

प्रस्तावित नाइट्रोजन की मात्रा 100 किलोग्राम/हे० के प्रयोग से प्रायः सहभागी धान का फसल लम्बा हो कर गिर जाता है। धान के इस किस्म के लिए प्रस्तावित नेत्रजन की मात्रा को पुनः निर्धारित करने की आवश्यकता है।

किसान की सहभागिता एवं उनकी प्रतिक्रिया:

किसान उर्वरक के नये प्रस्तावित मात्रा से सहमत हैं सिर्फ नेत्रजन की मात्रा छोड़कर। उनका कहना है कि नेत्रजन की मात्रा 100 कि०/हे० के बजाय 80 या 90 कि०/हे० तक घटाना चाहिए ताकि फसल गिरने की संभावना न रहे।

(3) शीर्षक: विलम्ब से बुआई की गयी गेहूँ में ताप के प्रभाव से उपज में कमी को पोटेशियम नाइट्रेट के पर्णीय छिड़काव से दूर करना।

समस्या: परिपक्वता की अवस्था में अधिक तापमान के कारण विलम्ब से बोयी गयी गेहूँ के उपज में कमी।

स्रोत: बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर

तकनीक का विस्तृत विवरण:

तकनीक-1: (कृषक पद्धति) – दिसम्बर के दूसरे पखवाड़ा में सामान्य तरीके से गेहूँ की खेती।

तकनीक-2: पोटेशियम नाइट्रेट के 0.5% घोल का पर्णीय छिड़काव, गाभा बनते समय एवं फूल की अवस्था में (दो बार)

तकनीक-3: पोटेशियम नाइट्रेट के 1.0% घोल का पर्णीय छिड़काव सिर्फ एक बार फूल की अवस्था में

उत्पादन तंत्र एवं साध्य क्षेत्र : धान, गेहूँ फसल चक्र

तकनीकों का मूल्यांकन, सूचकांक कारकों के साथ:

तकनीकी विकल्प	पुनरा वृत्ति	कल्लों की सं० (प्रति वर्ग मी०)	बाली में दानों की सं०	1000 दानों का वनज (ग्राम)	उपज (कु० / हे०)	उत्पादन लागत (रु०/हे०)	कुल लाभ (रु०/ हे०)	शुद्ध लाभ (रु०/ हे०)	लाभ एवं लागत का अनुपात
तकनीक-1	06	223.00	44.20	36.10	30.70	27670	55120	27450	1.99
तकनीक -2		262.50	49.40	38.90	34.10	28890	61560	32670	2.13
तकनीक -3		244.40	46.10	38.10	32.80	28790	58780	29970	2.04

परिणाम : विलम्ब से बोयी गयी गेहूँ फसल में विभिन्न तकनीकों के मूल्यांकन के पश्चात् यह पाया गया कि पोटेशियम नाइट्रेट के 0.5% घोल का फसल बढ़वार अवधि में दो बार पर्णीय छिड़काव अर्थात् गाभा अवस्था में एवं फूल खिलने की अवस्था में (तकनीक 2) करने से उपज (34.10 कु०/हे०), शुद्ध लाभ (32670 रु०/हे०) एवं लाभ-लागत अनुपात 2.13 प्राप्त हुआ जो अन्य अपनाए गए तकनीकों में सर्वाधिक था। प्राप्त परिणाम के अवलोकन से यह साबित होता है कि पोटेशियम नाइट्रेट के प्रयोग से ताप के प्रभाव को निष्क्रिय कर किसान भाई गेहूँ की उपज में वृद्धि ले सकते हैं। यह सत्य तकनीक-3 के परिणाम से भी स्पष्ट होता है।

अनुसंधान के लिए चिन्हित व्यवधान:

पोटेशियम नाइट्रेट का बाजार में आसानी से उपलब्ध नहीं होना/दुकानदार के पास इस उर्वरक के लाइसेंस का अभाव।

किसान की सहभागिता एवं उनकी प्रतिक्रिया:

इस नयी तकनीक को अपनाकर कृषक काफी लाभान्वित महसूस कर रहे हैं। इसके प्रचार-प्रसार के लिए वे कटिवद्ध दिख रहे हैं परन्तु पोटेशियम नाइट्रेट की अनुपलब्धता उनके लिए बड़ी समस्या होगी।

(4) **शीर्षक:** धान की उपज बढ़ाने के लिए इस्तेमाल विभिन्न प्रसार शिक्षण तरीकों के प्रभाव का आकलन।

समस्या: प्रसार शिक्षण विधियों के अनुचित प्रयोग से धान के उत्पादकता में कमी।

स्रोत: बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर

तकनीक का विस्तृत विवरण:

किसान की तकनीक: किसानों द्वारा धान की उन्नत बीज का लगाना

तकनीक-1: धान की उन्नत बीज + किसान क्लब + प्रशिक्षण

तकनीक-2: प्रत्यक्षण + किसान क्लब + प्रशिक्षण

तकनीक-3: प्रत्यक्षण + किसान क्लब + प्रशिक्षण + सूचना और संचार प्रौद्योगिकी

उत्पादन तंत्र एवं साध्य क्षेत्र: प्रसार शिक्षण विधियाँ

तकनीकों का मूल्यांकन, सूचकांक कारकों के साथ:

तकनीक	परीक्षण सं०	उत्पादन किंवटल प्रति हे०	लागत (रु०/हे०)	कुल आमदनी (रु०/हे०)	शुद्ध आमदनी (रु०/हे०)	लाभ लागत अनुपात	ज्ञान (%)	अंगकरण
किसान का तकनीक	40	42.90	27832	56443	28611	2.02	30.00	24.60
तकनीक 1		44.97	18982	59174	30192	2.14	37.80	31.60
तकनीक 2		47.19	28802	62102	33300	2.16	56.00	55.00
तकनीक 3		49.39	29570.5	64864	35293.5	2.19	67.80	63.60

परिणाम : उपरोक्त दर्शाए गये तथ्यों से यह ज्ञात होता है कि जब किसान प्रशिक्षण व प्रत्यक्षण के अलावे सूचना प्रौद्योगिकी का भी इस्तेमाल करते हैं तो धान का उत्पादन सभी तकनीक विकल्पों में से अधिकतम 49.39 किंव०/हे० पाया गया और इसकी आमदनी-लागत अनुपात भी सबसे अधिक (2.19) पाया गया साथ ही सबसे अधिक ज्ञान (67.80) एवं अंगीकरण (63.60) पाया गया। अतः विभिन्न प्रसार शिक्षण विधियों के साथ सूचना प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल भी जरूरी है।

अनुसंधान के लिए चिन्हित व्यवधान: सभी किसान सूचना प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल करना नहीं जानते हैं।

(5) शीर्षक: फूलगोभी के गुणवत्ता पर बोरोन के विभिन्न स्तरों का प्रदर्शन।

समस्या: जिला में उत्पादित फूलगोभी की गुणवत्ता निम्न स्तर का होना जिसके कारण बाजार में उचित मूल्य नहीं मिल पाता है।

स्रोत: बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर

तकनीक का विस्तृत विवरण:

किसान की तकनीक: 4 कि०ग्रा०/हे० बोरोक्स से मृदा उपचार।

तकनीक-1: 10 कि०ग्रा०/हे० बोरोक्स से मृदा उपचार।

तकनीक-2: 15 कि०ग्रा०/हे० बोरोक्स से मृदा उपचार।

तकनीक-3: 15 कि०ग्रा०/हे० बोरोक्स से मृदा उपचार +2 प्रतिशत बोरोन से पत्ते पर छिड़काव

परीक्षण की संख्या: 10

उत्पादन तंत्र एवं साध्य क्षेत्र: समेकित सूक्ष्म तत्व प्रबंधन

तकनीकों का मूल्यांकन, सूचकांक कारकों के साथ:

तकनीक	परीक्षण सं०	पौधे की लंबाई (से.मी.)	फूल का वनज (ग्राम)	उत्पादन किंवाटल प्रति हे०	लागत (₹०/हे०)	कुल आमदनी (₹०/हे०)	शुद्ध आमदनी (₹०/हे०)	लाभ लागत अनुपात
किसान का तकनीक	10	50.15	978.59	122.64	67138.67	122640	55501.33	1.83
तकनीक 1		53.30	1111.63	145.85	70284.56	145850	75565.44	2.06
तकनीक 2		53.89	1163.20	154.08	72432.00	154080	81607.44	2.13
तकनीक 3		53.95	1179.06	155.25	72464.11	155250	82785.89	2.14

परिणाम : उपर दर्शाए गये तथ्यों से यह पता चलता है कि किसान जब बोरोन का इस्तेमाल 15 किग्रा./हे० के दर से फूडकाव के बाद 2 प्रतिशत परिणाम छिड़काव करता तो कुल आमदनी के साथ-साथ बी. सी. अनुपात भी सबसे अधिक प्राप्त होता है। इसलिए इस तकनीक को अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित करना चाहिए।

अनुसंधान के लिए चिन्हित व्यवधान: किसानों को फूलगोभी उत्पादन में बोरोन के महत्व की जानकारी के अभाव में इसका इस्तेमाल उचित मात्रा में नहीं करते हैं। अतः बोरोन के विभिन्न स्तरों का फूलगोभी की गुणवत्ता का आकलन किया जा सकता है।

(6) शीर्षक : दूधारू पशुओं में दूध उत्पादन पर प्रोबायोटिक का प्रभाव

समस्या: दुधारू पशुओं में उत्पादकता एवं पाचन शक्ति की कमी।

तकनीक का विस्तृत विवरण:

तकनीक-1: कृषक पद्धति- प्रोबायोटिक का प्रयोग नहीं करना

तकनीक-2: प्रोबायोटिक का प्रयोग @ 10g प्रति दिन

तकनीक-3: प्रोबायोटिक का प्रयोग @ 25g प्रति दिन

तकनीक का स्रोत: बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, पटना

तकनीकों का मूल्यांकन, सूचकांक कारकों के साथ:

तकनीक	प्रतिदिन औसत दुग्ध उत्पादन (ली०)	दुग्ध उत्पादन का लागत	कुल आमदनी	शुद्ध आमदनी	आय- व्यय अनुपात
तकनीक-1	5.9	4425	9261	4836	2.09
तकनीक-2	6.8	4520	10694	6175	2.37
तकनीक-3	7.1	4662	11198	6537	2.40

परिणाम : परीक्षण के परिणाम से पता चलता है कि 25g प्रति दिन प्रोबायोटिक दुधारू पशुओं में दूध से उत्पादन में वृद्धि हो सकता है।

अनुसंधान के लिए चिन्हित व्यवधान: संतुलित आहार की कमी।

(7) **शीर्षक:** बिहार के लिए उपयुक्त खनिज मिश्रण तथा अन्य खनिज मिश्रण का आकलन

समस्या : पशुओं में कुछ खनिज लवण की कमी के कारण दूध उत्पादन में कमी।

तकनीक का स्रोत: बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना

तकनीक का विस्तृत विवरण:

तकनीक-1: कृषक पद्धति – साधारण खनिज मिश्रण का इस्तेमाल @ 50 ग्राम/दिन

तकनीक-2: बिहार के लिए उपयुक्त खनिज मिश्रण का इस्तेमाल @ 50 ग्राम/दिन

तकनीक-3: चिलेटेड खनिज मिश्रण का उपयोग @ 50 ग्राम/दिन

तकनीक	औसत दूध उत्पादन	कुल लागत	कुल आय	शुद्ध आय	लाभ-लागत अनुपात
कृषक पद्धति	6.09	6284	12789	6505	2.04
तकनीक-2	6.11	6191	12831	6640	2.07
तकनीक-3	6.69	6404	14075	7771	2.21

परिणाम : परीक्षण के परिणाम से पता चलता है कि चिलेटेड खनिज मिश्रण का प्रयोग से किसान अधिक लाभ कमा सकता है।

अनुसंधान के लिए चिन्हित व्यवधान:

1. पशुओं के लिए संतुलित आहार का अभाव
2. पशुओं के शुद्ध प्रजाति का अभाव

(8) शीर्षक : ओयस्टर मशरुम उत्पादन के आधार वस्तुओं में प्रयुक्त स्थानापन्न वस्तुओं के प्रभाव का आकलन

समस्या: ओयस्टर मशरुम उत्पादन की कम उपज एवं कम शुद्ध लाभ

तकनीक का स्रोत: मशरुम अनुसंधान निदेशालय, सोलन, हिमाचल प्रदेश।

तकनीक का विस्तृत विवरण:

तकनीक-1: कृषक पद्धति (गेहूँ का भूसा)

तकनीक-2: गेहूँ का भूसा + 10% गेहूँ का चोकर

तकनीक-3: गेहूँ का भूसा + 10% धान का चोकर

तकनीक-4: गेहूँ का भूसा + 10% मूँग का चोकर

उत्पादन तंत्र एवं साध्य क्षेत्र: मशरुम उत्पादन।

तकनीकों का मूल्यांकन, सूचकांक कारकों के साथ:

तकनीकी उपचार	ट्रायल की सं०	उत्पादन (कि० / 10 कि० आधार वस्तु)	कुल लागत (रु० / कि०)	कुल लाभ (रु० / कि०)	शुद्ध लाभ (रु० / कि०)	लाभ-लागत अनुपात
तकनीक 1	10	6.0	300.00	600.00	300.00	2.0
तकनीक 2	10	8.5	320.00	850.00	530.00	2.6
तकनीक 3	10	7.8	315.00	780.00	465.00	2.1
तकनीक 4	10	8.2	322.00	820.00	502.00	2.5

परिणाम : स्थानापन्न वस्तु के प्रयोग के परिणामस्वरूप आधार वस्तु का तापमान 2-3°C तक वृद्धि हो जाती है जिसका प्रभाव मशरुम उत्पादन पर पड़ता है। उपयुक्त परिक्षण में विभिन्न स्थानापन्न वस्तुओं के प्रभाव से संबंधित आकलन से यह निष्कर्ष निकला जा सकता है कि तकनीक 2-गेहूँ का भूसा +10% गेहूँ का चोकर मिलाकर यदि आधार वस्तु का प्रयोग किया जाता है तो लाभ एवं लागत अनुपात 2.6 सर्वाधिक प्राप्त होता है। तकनीकी विकल्प 4 जिसमें गेहूँ का भूसा के साथ 10% की दर से मूँग का चोकर मिलाया गया, लगभग बराबर 2.5 लाभ एवं लागत अनुपात दर्शाता है। इस आधार पर हम किसानों को मशरुम उत्पादन हेतु प्रयुक्त आधार वस्तुओं में गेहूँ/मूँग चोकर मिलाकर प्रयुक्त करने की तकनीक को अनुशंसित कर सकते हैं।

अनुसंधान के लिए चिन्हित व्यवधान: मशरुम उत्पादन हेतु तापमान का नियंत्रण किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

किसान की सहभागिता एवं उनकी प्रतिक्रिया: किसानों द्वारा उपरोक्त उत्पादन लागत में वृद्धि होने के बावजूद तकनीक अपनाने के लिए सहर्ष तैयार हैं। तकनीक के अपनाने के पश्चात् उत्पादन लाभ में निश्चित वृद्धि होगी।

(9) **शीर्षक :** बड़ी निर्माण के लिए विभिन्न दालों की उपयुक्तता का आकलन

समस्या: ग्रामीण क्षेत्रों में सामान्य रूप से उड़द की बड़ी बनाने का प्रचलन है जो स्वास्थ्य एवं पाचन की दृष्टि से लाभप्रद नहीं माना जाता है।

तकनीक का विस्तृत विवरण:

तकनीक-1: (कृषक पद्धति)– उड़द दाल की बड़ी

तकनीक-2: चना दाल की बड़ी

तकनीक-3: मूँग दाल की बड़ी

तकनीक का स्रोत: CFTRI, Mysore

तकनीकों का मूल्यांकन, सूचकांक कारकों के साथ: परिणाम प्रगति में है।

4. उद्यान फसलें

क्र०सं०	फसल	किस्म	पौधों की संख्या लगाये गये	जीवित
1.	आम	आम्रपाली, मल्लिका, मालदह, अलफॉसों, बम्बई, जरदालू, दशहरी, चौसा, गुलाबखास, हेमसागर, कृष्णभोग, सुकुल, सिपिया, फजली बारामासी, प्रभाशंकर, महमूद बहार, पहाड़पुर सिन्दुरिया, वेनजीर, कलकतिया	127	53 (+18)
2.	अमरूद	इलाहाबादी सफेदा, एल-49, ललित,	24	18
3.	आँवला	एनए0 7, एनए-10	08	07
7.	नीबू	कागजी	08	04 (+32)
08	जामुन	फूल जामुन	04	04
9.	कटहल	पिछेती किस्म	04	01
10.	मौसमी		04	03
11.	करौन्धा		04	04
12.	अमरा		04	04
13.	अनार		04	04

5. बीज एवं फल बिक्री विवरण (सितम्बर 2017 से अगस्त 2018)

क्र०सं०	फसल	प्रजाति	उपज (क्वि०)	बिक्री (क्वि०)	अभियुक्ति (रु०)
रबी					
1.	गेहूँ	एच. आइ.-1563 (T/L)	06.63	...	अप्रसंस्कृत
		सबौर निर्जल (F/S)	15.86	...	
		डी. बी. डब्ल्यू.14 (F/S)	18.80	...	
		डी. बी. डब्ल्यू.14 (C/S) (31.15	...	
2.	मसूर	HUL-57 (C/S)	03.03	...	
3.	सरसों	RGN-48 (T/L)	00.61	...	
4.	चना	BGM 547 (T/L)	00.35	...	
		Sabour-1	00.14	...	
		PG 186	00.355	...	
खरीफ					
5.	धान	सहभागी (C/S)	50.70	43.00	1,43,001.00 (बीज के रूप में)
		रा० श्वेता (F/S)	89.11	80.79	3,08,880.00
गरमा					
6.	मूंग	पी०डी०एम०-139 (T/L)	7.40	4.975	59,700.00
अन्य					
7.	आँवला	फल	4500.00
8.	अमरुद	बाग	
9.	आम	बाग	10,100.00
10.	मशरूम	1,200.00
11.	बकरी	42,800.00

6. वित्तीय स्थिति (चक्रीय खाता)

वर्ष	पूर्व की बचत राशि (01.04.18)	जमा की गई राशि (31.08.18)	कुल राशि	खर्च की राशि (31.08.18)	शेष बचत राशि (31.08.18)
2018 - 2019	17,68,044.85	3,42,639.00	21,10,683.85	1,78,019.00	19,32,664.85

7. प्रसार के अन्य कार्यक्रम (अगस्त 2018)

क्र० सं०	कार्यक्रम	संख्या	लाभार्थियों की संख्या
1.	प्रक्षेत्र दिवस	03	78
2.	किसान मेला	01	समूह
3.	वैज्ञानिकों का प्रक्षेत्र भ्रमण	301	301
4.	कृषकों का केन्द्र भ्रमण	2050	2050
5.	कार्यशाला	07	समूह
6.	तकनीकी बुलेटिन
7.	दूरदर्शन कार्यक्रम
8.	रेडियो वार्ता	01	समूह
9.	किसान का परिभ्रमण	02	86
10.	समाचार पत्रों में प्रकाशन	58	समूह
11.	किसान चौपाल	25	1063
12.	टेलिफोनिक सलाह	2519	2519
13.	उपचारात्मक परिभ्रमण	01	20
14.	किसान मोबाईल सलाह संदेश सेवा	32	समूह
15.	व्याख्यान	20	समूह
16.	सेमिनार	01	समूह
17.	स्वास्थ्य शिविर	07	156

8. अन्य उपलब्धियाँ:

1. दिनांक 27.07.18 को आकांक्षी गाँव में चल रहे कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया में जिला कृषि विभाग, गया के साथ बैठक आयोजित किया गया।
2. दिनांक 12.07.18 को माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार एवं महिला स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के साथ भीड़ियो कांफ्रेंसिंग के द्वारा संप्रेषण कार्यक्रम कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया में आयोजित किया गया।
3. माह जुलाई 2018 से डा0 निधि सिन्हा, विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान) के पद त्याग पत्र को निदेशक प्रशासन, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर के कार्यालय आदेश सं: DA/K-47/114 एवं ज्ञापांक: DA/K-47/512, दिनांक:12.07.2018 द्वारा स्वीकृति प्रदान करते हुए उनको वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा में नए सहायक प्राध्यापक के पद पर योगदान करने हेतु विरमित किया गया।
4. दिनांक 03.07.18 से 06.07.18 तक विषय वस्तु विशेषज्ञ (प्रसार शिक्षा एवं पशु विज्ञान) द्वारा बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर में आयोजित ToT प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया गया।
5. दिनांक 20.06.18 को माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार एवं देश के किसानों के साथ भीड़ियो कांफ्रेंसिंग के द्वारा संप्रेषण कार्यक्रम कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया में आयोजित किया गया जिसमें माननीय कृषि मंत्री, बिहार सरकार द्वार भाग लिया गया।
6. दिनांक 15.05.18 से 22.05.2018 तक गया कॉलेज, गया के स्नातक (Environment & water management) II एवं III वर्ष के छात्र/छात्राओं को मिट्टी जाँच एवं कृषि से संबंधित विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया है।
7. दिनांक 02.05.18 को ग्राम स्वराज योजना अभियान के तहत बिला (डोभी) गाँव में माननीय कृषि मंत्री, बिहार सरकार की अध्यक्षता में रात्रि चौपाल कार्यक्रम का आयोजन जिसमें विषय वस्तु विशेषज्ञ-शष्य विज्ञान द्वारा भाग लिया गया।
8. दिनांक 10.05.18 को प्रभारी प्रधान द्वारा बामेती पटना में आयोजित राज्य स्तरीय खरीफ महाभियान सह महोत्सव में भाग लिया गया।
9. दिनांक 26.03.18 से 28.03.18 तक केन्द्र पर 'पंचायती राज के तहत निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के क्षमता संवर्धन' हेतु 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें जिले की 45 महिला जनप्रतिनिधियों ने भाग लिया।
10. दिनांक 21.03.18 को केन्द्र पर 'प्रभात खबर' दैनिक अखबार के सहयोग से एक दिवसीय "कृषक परिचर्चा" का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
11. दिनांक 17.03.18 को नेशनल कांफ्रेंस में माननीय प्रधानमंत्री के संबोधन का सीधा प्रसारण केन्द्र पर किया गया जिसमें लगभग 700 प्रतिभागी सम्मिलित हुए।
12. दिनांक 27.02.2018 को विषय वस्तु विशेषज्ञ-पशु विज्ञान द्वारा पशु स्वास्थ्य कैम्प का आयोजन किया गया।

13. दिनांक 24–26.02.2018 को B.A.U., Sabour में आयोजित क्षेत्रीय किसान मेला 2018 में गया जिले के किसानों द्वारा भाग लिया गया।
14. दिनांक 20.02.18 को कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया में प्रसार कार्यकर्ताओं को उद्यम में दक्षता विकास हेतु प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें 169 प्रतिभागी भाग लिए।
15. दिनांक 14.02.2018 को माननीय कुलपति एवं निदेशक प्रसार शिक्षा B.A.U., Sabour द्वारा केन्द्र का भ्रमण किया गया।
16. दिनांक 21.01.2018 को बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के प्रशिक्षु वैज्ञानिकों की टीम द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, गया का भ्रमण किया गया।
17. दिनांक 20.01.2018 को प्रभारी प्रधान एवं कृषि उत्पादन आयुक्त, बिहार सरकार, पटना द्वारा केन्द्र में बैठक संपन्न की गई।
18. दिनांक 18.01.2018 को प्रभारी प्रधान एवं NITI Aayog, New Delhi के सहायक निदेशक द्वारा कृषको के प्रक्षेत्र भ्रमण एवं केन्द्र में बैठक का आयोजन किया गया।
19. दिनांक 01.01.2018 से 25.01.18 तक किसान ज्ञान रथ के साथ विषय वस्तु विशेषज्ञों द्वारा गया जिले के विभिन्न ग्रामों में भ्रमण कर प्रशिक्षण दिया गया।
20. दिनांक 18.12.2017 को प्रभारी प्रधान ने कृषि विज्ञान केन्द्र एवं आत्मा के समन्वय हेतु बामेती, पटना द्वारा आयोजित बैठक में भाग लिया।
21. दिनांक 06.12.17 से 31.12.2017 तक में विभिन्न गाँवों में किसान ज्ञान रथ का भ्रमण कराया गया जिसमें सभी विषय वस्तु विशेषज्ञों द्वारा तकनीकी जानकारियाँ दिया गया।
22. दिनांक 05.12.17 को केन्द्र परिसर में विश्व मृदा दिवस का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन माननीय सांसद, गया श्री हरि मांझी के कर कमलों द्वारा किया गया एवं इस कार्यक्रम में 437 किसानों ने भाग लिया।
23. दिनांक 29.11.17 को केन्द्र एवं प्रखण्ड के तत्वाधान में आयोजित जैविक खेती कार्यक्रम ब्रह्मा कुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय, माउण्ट आबू राजस्थान की शाखा ए. पी. कॉलोनी, गया की ओर से केन्द्र के सभागार में व्याख्यान दिया गया जिसमें 80 कृषकों ने भाग लिया।
24. दिनांक 28.11.17 से 30.11.2017 तक बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर (भागलपुर) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार—“Doubling farmers income and farm production skill development and technology application” में मुख्य वैज्ञानिक—सह—विश्वविद्यालय एवं प्रभारी प्रधान, विषय वस्तु विशेषज्ञ—प्रसार शिक्षा सस्य विज्ञान एवं पशु विज्ञान ने भाग लिए।
25. दिनांक 22.11.17 को केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ—सस्य विज्ञान द्वारा सोनपुर पशुमेला में आयोजित फसल सेमीनार में भाग लिया गया।
26. दिनांक 09.11.17 को बिहार कृषि रोड मैप बिहार सरकार, ज्ञान भवन, पटना में महामहिम राष्ट्रपति द्वारा उद्घाटन किया गया एवं उद्घाटन समारोह में मुख्य वैज्ञानिक—सह—विश्वविद्यालय एवं प्रभारी प्रधान, विषय वस्तु विशेषज्ञ—गुह विज्ञान, प्रसार शिक्षा एवं सस्य विज्ञान द्वारा भाग लिया गया।

27. दिनांक 31.10.17 को विषय वस्तु विशेषज्ञ-पशु विज्ञान द्वारा रजोई रामपुर (परैया) गाँव में **पशु स्वास्थ्य शिविर** का आयोजन किया गया।
28. दिनांक 23.10.17 को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान परिसर, पटना में विषय “Doubling farmer’s income” पर आयोजित बैठक में मुख्य वैज्ञानिक-सह- विश्वविद्यालय एवं प्रभारी प्रधान द्वारा भाग लिया गया।
29. दिनांक 15.10.17 को केन्द्र के सभागार में आयोजित **राष्ट्रीय महिला किसान दिवस कार्यक्रम** में 120 महिला किसानों ने भाग लिया।
30. दिनांक 09.10.17 को प्रमण्डल स्तरीय रबी महाभियान, गया में मुख्य वैज्ञानिक-सह-विश्वविद्यालय एवं प्रभारी प्रधान, विषय वस्तु विशेषज्ञ-गुह विज्ञान, प्रसार शिक्षा, सस्य विज्ञान एवं पशु विज्ञान द्वारा भाग लिया गया।
31. दिनांक 25.09.17 को **सर्वत्र स्वच्छता** कार्यक्रम का आयोजन बोधगया में किया गया।
32. दिनांक 19.09.17 एवं 14.09.17 को विषय वस्तु विशेषज्ञ-पशु विज्ञान द्वारा **पशु स्वास्थ्य शिविर** का आयोजन किया गया।
33. दिनांक 17.09.17 को **स्वच्छता ही सेवा** कार्यक्रम का आयोजन केन्द्र में किया गया।

प्रस्तावित कार्य योजना (अप्रैल 18 से मार्च 19)

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम

(क) कृषकों के लिए

क्र०सं०	विषय	प्रशिक्षण की संख्या	लाभार्थियों की संख्या
01.	फसल उत्पादन	08	200
02.	पशुचिकित्सा एवं पशुपालन	08	192
03.	प्रसार शिक्षा	13	260
कुल		29	652

(ख) बेरोजगार युवक/युवतियों के लिए

क्र०सं०	विषय	प्रशिक्षण की संख्या	लाभार्थियों की संख्या
01.	फसल उत्पादन	01	25
02.	पशुचिकित्सा एवं पशुपालन	01	20
03.	प्रसार शिक्षा	02	40
कुल		04	85

(ग) प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए

क्र०सं०	विषय	प्रशिक्षण की संख्या	लाभार्थियों की संख्या
01.	फसल उत्पादन	01	25
02.	पशुचिकित्सा एवं पशुपालन	01	25
03.	प्रसार शिक्षा	02	50
कुल		04	100

2. प्रशिक्षण के प्रस्तावित विषय:

i. सस्य विज्ञान

- खरीफ मक्का में खर-पतवार एवं सिंचाई प्रबंधन
- जैविक खेती एवं टिकाउ खेती के लिए जैव उर्वरकों की उपयोगिता
- विलंब की स्थिति में बोई गई गेहूँ की उत्पादन तकनीक
- गेहूँ में उर्वरक एवं सिंचाई प्रबंधन
- दलहनी फसलों की उत्पादन तकनीक
- तेलहनी फसलों में उर्वरक एवं सिंचाई प्रबंधन
- गरमा मूँग उत्पादन तकनीक
- जैविक उत्पादन में हरी खाद की महत्ता

ग्रामीण युवक/युवतियों के लिए

- खाद्यान्न फसलों की बीज उत्पादन तकनीक।

प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए

- रबी फसलों की उन्नत उत्पादन तकनीक।

ii. पशु चिकित्सा विज्ञान

- वर्ष भर हरे चारे का फसल चक्र प्रबंधन।
- घर के हाते में मुर्गी पालन।
- विभिन्न मौसम में पशु प्रबंधन।
- स्वच्छ दुग्ध उत्पादन तकनीक।
- बकरी में सामान्य रोगों का प्रबंधन।
- दूधारू पशुओं में अधिक दुग्ध उत्पादन की तकनीक।
- पशुओं में कृमिहरण दवा का उपयोग।

ग्रामीण युवक/युवतियों के लिए

- दुग्धशाला प्रबंधन

प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए

- बैकयार्ड मुर्गीपालन

iii. प्रसार शिक्षा

- समूह द्वारा किसानों का समाजिक –आर्थिक उत्थान
- किसान पाठशाला किसानों का समय की मांग है
- जैविक खेती किसानों का समय की मांग
- बाजार की जानकारी के लिए इलेक्ट्रॉनिक मिडिया का इस्तेमाल
- प्रक्षेत्र उत्पादों को बेचने के लिए बाजार की उपलब्धता
- बीज उत्पादन हेतु किसानों/महिलाओं का क्षमता विकास
- सब्जी बीज उत्पादन हेतु क्षमता विकास
- स्वयं सहायता समूह द्वारा आय में वृद्धि
- समूह द्वारा आय दुगुना
- समूह में कार्य कर मुख्य धारा से जुड़ना
- केंचुआ खाद द्वारा मुख्य धारा से जोड़ना
- मूल्य संवर्धन द्वारा आय में वृद्धि
- कृषि में उद्यमिता विकास

ग्रामीण युवक/युवतियों के लिए

- वर्मीकम्पोस्टिंग उद्यमिता विकास का माध्यम
- मधुमक्खीपालन द्वारा आय दोगुणा

प्रसार कार्यकर्त्ताओं के लिए

- वर्मीकम्पोस्टिंग द्वारा आय दोगुणा
- मधुमक्खीपालन के माध्यम से आय में वृद्धि

3. प्रसार के अन्य कार्यक्रम

क्र०सं०	कार्यक्रम	संख्या	लाभार्थियों की संख्या
1.	प्रक्षेत्र दिवस	10	250
2.	किसान चौपाल	40	1000
3.	किसान मेला (सहभागिता)	03	समूह
4.	वैज्ञानिकों का प्रक्षेत्र भ्रमण	100	100
5.	कृषकों का केन्द्र भ्रमण	600	600
6.	किसान क्लब	04	04
7.	फसल सेमिनार	01	01
8.	तकनीकी बुलेटिन	02	समूह
9.	दूरदर्शन कार्यक्रम	02	समूह
10.	रेडियो वार्ता	04	समूह
11.	रिसर्च पेपर	02	समूह
12.	पशु स्वास्थ्य शिविर	10	400
13.	समाचार पत्रों में प्रकाशन	50	समूह
14.	टेलिफोनिक सलाह	500	500
15.	उपचारात्मक भ्रमण	10	10
16.	कृषक परिभ्रमण	02	02

अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण का कार्य योजना वर्ष 2018-19

(तिलहन एवं दलहन) फसलों का प्रत्यक्षण (रबी 2018-19)

क्र सं०	फसल	पुर्व फसल एवं फसल कार्यक्रम			कृषि की स्थिति		क्षे० (हे०)	प्रभेद	बुआई की समय	प्रत्यक्षण तकनीक
		गरमा	खरी फ	रबी	वर्षा आधारित	सिंचित				
तिलहन										
1.	सरसों/ राई	मूँग	धान	राई	—	सिंचित	10	पूसा महक/ रा० सुफलम/ RGN 48	अक्टूबर/ दिसम्बर	बीज + सल्फर + खर-पतवारनाशी
दलहन										
1.	मसूर	मूँग	धान	मसूर	वर्षा आधारित	—	30	HUL 57	नवम्बर	बीज + राइजोबियम + ट्राइकोडर्मा
2.	मूँग	मूँग	धान	गेहूँ	—	सिंचित	40	PDM 139	मार्च	बीज + उपचार तकनीक
3.	चना	मूँग	धान	चना	—	असिंचित	20	PG 186	अक्टूबर	बीज + उपचार तकनीक
4.	अरहर	—	—	—	—	असिंचित	10	NA 1	जुलाई (फसल खेत में लगा है)	बीज + कीटनाशी + खर-पतवारनाशी
(तिलहन एवं दलहन) फसलों के अतिरिक्त प्रत्यक्षण (2018-19)										
1.	धान	सब्जी	धान	गेहूँ	—	सिंचित	10	रा० श्वेता	जून-अगस्त (फसल खेत में लगा है)	बीज + जिंक सल्फेट
2.	गेहूँ	मूँग	धान	गेहूँ	—	सिंचित	20	एच० डी० 2985	नवम्बर	पछेती किस्में + खर-पतवारनाशी
3.	पशु	चारा	—	—	—	—	15	मक्खन घास		बीज
4.	बंदगोभी	मूँग	मक्का	सब्जी	—	सिंचित	2.0	संकर	अक्टूबर	बीज

कृषक प्रक्षेत्र पर परीक्षण की कार्य योजना वर्ष 2018-19

<u>विभाग</u>	<u>शीर्षक</u>	<u>परीक्षण संख्या</u>
सस्य विज्ञान	<ol style="list-style-type: none"> विलम्ब से बुआई की गई गेहूँ में ताप के प्रभाव से उपज में कमी को पोटेशियम नाइट्रेट के पर्णाय छिड़काव द्वारा दूर करना। सबौर चना-1 का अन्य उपजशील प्रभेदों के साथ उपज का आकलन उर्वरक के भिन्न-भिन्न मात्राओं के प्रयोग से कम अवधि वाली धान में उपज का आकलन। 	
प्रसार शिक्षा	<ol style="list-style-type: none"> किसानों के ज्ञान बढ़ाने हेतु इस्तेमाल विभिन्न प्रसार शिक्षण विधियों का आकलन फूलगोभी के गुणवत्ता पर बोरॉन के विभिन्न स्तरों का प्रदर्शन 	
पशुचिकित्सा	<ol style="list-style-type: none"> सूक्ष्म खनिजों एवं आयुर्वेदिक दवाओं का गर्म न होने वाले पशुओं पर प्रभाव प्रोबायोटिक और प्रीबायोटिक की दुग्ध उत्पादन पर प्रभाव 	

स्थान: मानपुर, गया
दिनांक: 05.09.2018

मुख्य वैज्ञानिक-सह-विश्वविद्यालय
प्राध्यापक, प्रभारी प्रधान
कृषि विज्ञान केन्द्र, गया